चीन–पाकिस्तान के बढ़ते संबंध एवं भारत के लिए सुरक्षा चुनौती

हंसराज
शोधार्थी, रक्षा एवं स्त्रातेजिक विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

संक्षेपिका

चीन–पाकिस्तान भारत के पड़ोसी राष्ट्र है, जो भारत के शत्रु भी माने जाते हैं। चीन–पाकिस्तान के आपसी संबंध बहुत अच्छे हैं। भारत के साथ दोनों देशों के संबंध प्राचीन समय से ही कटु रहे हैं। पाकिस्तान जब से भारत से अलग हुआ है तब से ही वह भारत को अपना शत्रु मानता आ रहा है। प्रमुख कारण कश्मीर विवाद है जिसके लिए वह भारत पर कई बार आक्रमण कर चुका है। लेकिन पाकिस्तान चीन को अपना मित्र मानता है। जिसके लिए उसने चीन के साथ अनेक समझौते किए है। पाकिस्तान व चीन का एकमात्र लक्ष्य भारत को सुपर पावर बनने से रोकना है। इसी कारण दोनों देश भारत के खिलाफ कुटनीतिक चाले चलते रहते हैं तथा भारत पर आतंकी गतिविधियों को अंजाम देते रहते हैं। चीन एक सुपर पावर है और वह जानता है कि एशिया में केवल भारत ही उसे प्रतिस्पर्धा दे सकता है। इसलिए वह भारत को रोकने के लिए पाकिस्तान को सहायता प्रदान करता है तथा उसे भारत के खिलाफ मोहरे के रूप में उपयोग कर रहा है। प्रस्तुत शोध–पत्र में बताया गया है कि किस–किस तरह से पाक–चीन संबंध निरंतर बढ़ें तथा भारत की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो। क्योंकि दोनों देश भारत को अपना सबसे बड़ा शत्रु मानते हैं तथा अपनी कुटनीतिक चालों से विकास में बाधा पहुंचा रहे हैं।

शब्दार्थ : *कूटनीति, पाकिस्तान, चीन, परमाणु तकनीकि, विरोध, संबंध*

प्रस्तावना

भारतीय सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा चीन–पाक गठजोड़ रहा है। पाक–चीन के मध्य सामरिक संबंधों को भी हमें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। चीन द्वारा पाकिस्तान के साथ संबंध बढ़ाने के पीछे भारत को कमजोर करने की साजिश रही है। चीन भारत के विरूद्ध बिना हथियार चलाये ही, हथियारों की आपूर्ति के माध्यम से भारत के साथ युद्ध छेड़े हुए है।[1] पाकिस्तान ने अपने संगठन में शामिल करने की नियत के कारण पहले ही 1950 में साम्यवादी चीन को मान्यता दे दी थी और सामान्य राजनीतिक संबंध स्थापित कर लिये थे। जैसे ही पाक नीतियों से साम्यवादी विचारों के प्रति विरोध स्वर मुखरित हुए और उसने सीटों की सदस्यता वर्ष 1954 में ग्रहण की, तो चीन उससे नाराज हो गया और पाकिस्तानी प्रवृत्ति की आलोचना की। धीरे–धीरे पाकिस्तान और चीन के संबंधों में सुधार हुआ। ज्यों–ज्यों भारत और चीन के संबंध तानवपूर्ण हुए त्यों–त्यों पाकिस्तान और चीन के संबंध मधुर होते रहे।

1962 में भारत पर जब चीन ने आक्रमण किया, तो पाकिस्तान ने उसका समर्थन किया। एशिया में भारत की स्थिति को कमजोर करने के लिए एवं चीन के साथ अपने संबंध सुधारने के लिए 1963 में पाकिस्तान ने चीन के साथ एक सीमा समझौता करके कश्मीर का एक बड़ा भू–भाग उसे प्रदान कर दिया। चीन की स्थिति को मजबूत करने हेतु चीन से पाकिस्तान तक सड़क बनाने का समझौता भी पाकिस्तान ने किया और 1965 के युद्ध के समय भारत का विरोध करके चीन ने पाकिस्तान को अपना समर्थन दिया। चीन ने पाकिस्तान की प्रत्येक उस नीति का समर्थन किया जो भारत विरोधी हो। अतः दोनों में भारत विरोधी षड़यन्त्र के साथी होने का मैत्री पुल है।[2]

1962 के बाद से ही चीन भारत को घेरने के लिए प्रयासरत रहा है। भारत की सोवितय संघ के साथ मित्रता चीन की राह में अवरोधक थी। इसलिए 70 के दशक से ही शीत युद्ध की मौजूदगी में चीन ने अमेरिका के कारण एशिया महाद्वीप भी शीतयुद्ध की चपेट में आ गया। चीन ने अपनी एशियाई नीति में परिवर्तन कर भारत को घेरने के लिए राजनयिक चालें चलनी शुरू कर दी और भारत के आसपास के छोटे राष्ट्रों का सहायक बन गया। तत्पश्चात् चीन के लिए भारत विरोधी अभियान चलाना कठिन कार्य नहीं रहा। चीन–पाकिस्तान की हर उस नीति का समर्थन करने लगा। जोकि भारत विरोधी हो या फिर भारत को क्षति पहुंचा सके। चीन–पाकिस्तान शिष्ट मण्डलों, विदेश मंत्रियों एवं कूटनीतिज्ञों की यात्राओं के माध्यम से मैत्री संबंध बढ़ते गए और परिणामस्वरूप पाकिस्तान आर्थिक, व्यापारिक, वाणिज्यिक तकनीकी, सैन्य शस्त्रों आदि सभी क्षेत्रों में विकास करता गया। अपनी रणनीति के तहत चीन ने न केवल असंख्य मात्रा में हथियार दिए, बल्कि सभी नियमों की अनदेखी कर परमाणु तकनीकी संशोधन परमाणु प्रशिक्षण, कलपुर्जे तथा उपकरण भी प्रदान किए। 1990 में चीन व पाक ने पूरे दशक के लिए समझौता कर डाला जिसमें हथियारों की आपूर्ति के साथ ही साथ शोध एवं तकनीकी विकास के स्थानान्तरण का प्रावधान भी शामिल था।[3]

रक्षा एवं सैन्य सहयोग

चीन व पाकिस्तान के मध्य अनेक सैन्य व रक्षा समझौते हुए जो भारत के लिए एक चुनौती है। पाकिस्तान को इतना प्रोत्साहन देने की चीन की बड़ी वजह उसके रणनीतिकारों के मुताबिक, दक्षिण एशिया में 'अनुकूल संतुलन' कायम करना है दूसरे शब्दों में, पाकिस्तान को चीन द्वारा दी जा रही सहायता यह आश्वस्त करने के लिए है कि भारत अपने पड़ोस में फंसा रहे और उससे उसे चुनौती मिलती रहे, बजाए इसके कि वह चीन के क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धी के तौर पर उभर सके।

चीन और पाकिस्तान संयुक्त रूप से जेएफ–17 थंडर नाम का हल्का लड़ाकू विमान बना रहे हैं। जबकि चीन के नए पांचवी पीढ़ी वाले स्टेल्थ फाइटर के निर्यात संस्करण पर बातचीत जारी है। दोनों

देशों ने चीन का सबसे बड़ा सैन्य समझौता पूरा किया। पांच अरब डालर में आठ हमलावर पनडुब्बियों की पाकिस्तान को बिक्री, जिन्हें अरब सागर में तैनात किया जाएगा।

सामरिक योजनाओं के बारे में स्पष्ट होता है कि चीन की भारी भरकम जल–थल–नभ सेनाओं पर फौजी बजट में भारी वृद्धि के जरिए और ज्यादा व्यय किया जा रहा है। यहां तक कि सीपीईसी का भी एक स्पष्ट सैन्य आयाम है, कि जो पाकिस्तान के विकास में वहाँ की फौज की बढ़ती भूमिका को साफ करता है, उसकी फौज ने 15000 सैनिकों की एक विशेष सुरक्षा टुकड़ी खड़ी की है जिसका काम परियोजनाओं की निगरानी करना है।[4] चीन व पाकिस्तान के सैन्य गठजोड़ से भारत की परेशानी बढ़ गई है। भारत के सशस्त्र बलों को 2009 से ही दो मोर्चों पर चीन और पाकिस्तान के खिलाफ जंग की तैयारी करने के लिए मजबूर कर दिया है। इसने सियाचीन ग्लेशियर से पीछे हटने के खिलाफ भी उनके रवैए को कड़ा कर दिया है, जो पी.ओ.के. में शक्सगाभ घाटी और बालिस्तान के बीच स्थित है। भारतीय सेना के एक जनरल कहते हैं, "भारत–पाकिस्तान के बीच एक और लड़ाई में चीन शामिल नहीं होगा, लेकिन भारत–चीन लड़ाई में पाकिस्तान उतरेगा।"

विश्लेषकों का कहना है कि नए सिरे से परवान चढ़े चीन–पाक रिश्ते दरअसल भारत के खिलाफ पाकिस्तान के छद्म युद्ध को और तीखा कर सकते हैं। ब्रिगेडियर गुरमीत कंवल (रिटायर्ड), कहते हैं, "अपनी भीतरी अस्थिरता, पृथकतावादी रूझानों और जर्जर अर्थव्यवस्था के चलते पाकिस्तान के लिए अपने दम पर तो इस छद्म युद्ध को चलाते रहना मुमकिन नहीं होता, लेकिन चीन के समर्थन से वह ऐसा कर सकता है।"[5]

चीन की पाकिस्तान को आर्थिक सहायता

पाकिस्तान को मदद के संदर्भ में चीन के कुछ महत्वकांक्षी उद्देश्य हैं। विकास और बुनियादी ढांचे के लिए मद्द के तौर पर करीब 46 अरब डालर की मदद देने के संकेत हैं। इसका उपयोग मुख्य तौर पर बिजली उत्पादन और परिवहन संपर्क को मजबूत बनाने के लिए किया जाएगा। इसका मुख्य लक्ष्य चीन–पाकिस्तान के बीच आर्थिक गलियारा कायम करना है। जो अरब सागर के तट पर स्थित पाकिसतान के ग्वादर बंदरगाह को उत्तर–पश्चिम चीन में शिनजियांग से जोड़ेगा। माना जा रहा है कि इसके लिए कई अरब डालर की लागत वाली परियोजनाओं को 2030 तक पूरा कर लिया जाएगा। जब यह परियोजना पूर्ण हो जाएगी तो पूरी संभावना है कि इससे दक्षिण एशिया का व्यापार और उर्जा समीकरण मौलिक रूप से बदल जाएगा। चीन की पहुंच अरब सागर तक होने से वह भारत के पश्चिमी हिस्से पर भी निगरानी कर सकता है। चीन भारत को घेरने के लिए ऐसा कर रहा है। वह पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह को सड़क मार्ग द्वारा जोड़ रहा है। जो पी.ओ.के से होकर गुजरता है। यह भारत के लिए

चिंता का विषय बना हुआ है। चीन पाकिस्तान में अधिक से अधिक निवेश कर रहा है तथा उसे कर्ज के नीचे दबा रहा है। जिससे वह पाकिस्तान से अपनी बातें मनवा सके। चीन पश्चिमी शिजियांग प्रांत के काशगर को ग्वादर के साथ जोड़ेगा और जिसके अंतर्गत 35 अरब डालर ऊर्जा सौदे तथा 11 अरब डालर की इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाएं शामिल हैं।[6] इसके अतिरिक्त चीन ने लॉन्ग मार्च–2सी राकेट से दो उपग्रह लांच किए है। तकरीबन 19 साल के दौरान 'लॉन्ग मार्च–2' राकेट का यह पहला अंतर्राष्ट्रीय व्यवसायिक प्रक्षेपण है।

चीन और पाकिस्तान की दोस्ती पिछले कुछ समय में बढ़ी है और दोनों के ही संबंध भारत से ठीक नहीं हैं। ऐसे में चीन का अंतरिक्ष के क्षेत्र में पाकिस्तान का साथ देना भारत की चिंता बढ़ा सकता है। चीन और पाकिस्तान का इरादा इसके जरिए भारत की गतिविधियों पर नज़र बनाए रखना भी हो सकता है। जो सुरक्षा के नज़रिए से ठीक नहीं है। यह भारत के लिए चिंता का विषय है।[7] चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने 2015 में पाकिस्तान की यात्रा की पहले यह यात्रा इसलिए टल रही थी क्योंकि दोनों मुल्क जिस करवट की तैयारी कर रहे थे, वह यकीनन बहुत बड़ी होने वाली थी। पाकिस्तान को अपना आर्थिक भविष्य चीन के हाथ सौंपने से पहले, अमेरिका से दूरी बनाने का साहस जुटाना था। जबकि चीन को दुनिया के सबसे जोखिम भरे देश में दखल की रणनीति पर मुतमईन होना था। सब कुछ योजना के मुताबिक हुआ और जिनपिंग और नवाज शरीफ के बीच समझौते के साथ ही दक्षिण एशिया की कूटनीतिक बिसात सिरे से बदल गई। भारत इस बदलाव को चाह कर भी नहीं रोक सका। अमेरिका ने रोकने में रूचि नहीं ली। चीन–पाक समझौते से अब न केवल एक नया पाकिस्तान भारत से मुकाबिल होगा बल्कि दिल्ली की सरकार को देश की सीमा से कुछ सौ किलोमीटर दूर पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर सहित काशगर से ग्वादर तक चीनी कम्पनियों की धमाचौकड़ी के लिए तैयार रहना होगा।

46 अरब डालर कितने होते हैं? अगर यह सवाल पाकिस्तान से संबंधित हो तो जवाब है कि यह आंकड़ा पाकिस्तान की जीडीपी के 20 फीसदी हिस्से के बराबर है। यही वह निवेश है जिसके समझौते पर जिनपिंग और नवाज शरीफ ने दस्तखत किए हैं। समझना मुश्किल नहीं है कि चीन ने पाकिस्तान की डूब चुकी अर्थव्यवस्था को न केवल गोद में उठा लिया है, बल्कि यह निवेश जिस प्रोजेक्ट में हो रहा है, उसके तहत लगभग पूरा पाकिस्तान चीन के प्रभाव में होगा, जो भारत के लिए खतरे की घंटी है।[8]

भारत के विकास में बाधक चीन–पाक की दोस्ती

भारत के विकास में चीन–पाक की दोस्ती बाधक का कार्य कर रही है। चीन के साथ पाकिस्तान की बढ़ती नजदीकियां गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है। इसके कोई संकेत नहीं कि पाकिस्तान भारत

को स्थाई शत्रु मानने की रणनीति को बदलने वाला है। ऐसे में हैरानी नहीं कि चीन–पाकिस्तान गठजोड़ भारत के खिलाफ ही काम करेगा। इसके अलावा चीन, भारत के सभी पड़ौसी देशों के साथ भी आक्रामक रूप से संबंध मजबूत बना रहा है। इसकी वजह से मालदीव और नेपाल जैसे देशों के साथ भारत कि रिश्ते और जटिल हुए हैं। इन देशों को संदेश दिए जाने की जरूरत है कि भारत अपने हितों के साथ कोई समझौता नहीं चाहेगा।[9]

एनएसजी में भारत के प्रवेश को पिछले कई वर्षों से चीन रोक रहा है। भारत के परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं करने को आधार बना कर चीन पहुंचा रहा है। चीन के सहयोगी पाकिस्तान ने भी 2016 में एनएसजी की सदस्यता के लिए आवेदन किया था। लेकिन उसे सदस्यता नहीं मिली थी। लेकिन ज्यादातर देश भारत के पक्ष में हैं। एनएसजी के ज्यादातर सदस्य देश भारत के प्रयास का समर्थन करते हैं। भारत की सदस्यात के लिए अमेरिका और कई पश्चिमी देश भारत के साथ खड़े हैं। लेकिन चीन भारत के खिलाफ खड़ा है।[10] आतंकवाद पर भी चीन अब पाकिस्तान के साथ खड़ा हो गया है। क्योंकि जब आतंकवाद पर अमेरिका की पाकिस्तान को लताड़ और सैन्य सहायता रोकने के फैसले के खिलाफ चीन अपने दोस्त का साथ देने के लिए खड़ हुआ है। चीन ने आतंकवाद के लिए पाकिस्तान को जिम्मेदार ठहराए जाने का विरोध किया और कहा कि पाकिस्तान को कठघरे में खड़ा करते समय उसके आतंकवाद के खिलाफ किए कार्यों को ध्यान में नहीं रखा गया। चीन कई बार कह चुका है कि पाकिस्तान ने आतंकवाद के खिलाफ छिड़े अंतर्राष्ट्रीय अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और काफी बलिदान दिए है। आतंकवाद निरोधी अभियान को आपसी तालमेल और परस्पर सम्मान की भावना से मजबूती मिल सकती है, न कि किसी देश पर अंगुली उठाकर उसे आरोपी बनाकर।[11] चीन ने आतंकवादी संगठन जैश–ए–मुहम्मद के कुख्यात सरगना मसूद अज़हर को अंतर्राष्ट्रीय आतंकी घोषित करने के प्रस्ताव पर भी रोक लगा दी। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में चीन बार–बार इस आतंकी सरगना के पक्ष में खड़े होकर केवल कूटनीतिक बेशर्मी का ही परिचय नहीं दे रहा है, बल्कि पाकिस्तान को आतंक के साथ–साथ भारत विरोध के रास्ते पर चलने के लिए प्रोत्साहित भी कर रहा है। यदि पाकिस्तान दक्षिण एशिया की शांति के लिए खतरा और इस क्षेत्र के विकास में एक बड़ा बाधक बन गया है। तो चीन की संकीर्ण और शातिर सोच के कारण। यह हास्यास्पद है कि चीन एक और दुनिया में अपनी छवि बेहतर बनाना चाहता है और दूसरी ओर एक ऐसे आतंकी सरगना का बचाव करने में लगा हुआ है। जिसका संगठन बहुत पहले संयुक्त राष्ट्र की ओर से प्रतिबंधित है। पाकिस्तान जब तक चीन की शह से आतंकी संगठनों को पालने पोसने का काम करता रहता है तब तक भारत को उसे लेकर हर क्षण सावधान रहना होगा। बेहतर होगा कि उसकी आतंकी हरकतों का मुंह तोड़ जवाब देने में और अधिक आक्रामकता का परिचय दिया जाए।[12]

निष्कर्ष

भारत के पड़ौसी देश चीन–पाकिस्तान की दोस्ती भारत के लिए एक बहुत बड़ी समस्या का रूप धारण कर चुकी है। क्योंकि चीन एक विकसित देश है और वह भारत के विकास में बाधक का कार्य कर रहा है। वह अपनी कूटनीतिक चालों से भारत को उलझा रहा है। वह पाकिस्तान को समर्थन दे रहा है। ताकि वह भारत में आतंकी गतिविधियां शुरु रख सके तथा उसे आर्थिक व सैन्य सहायता भी प्रदान कर रहा है। क्योंकि चीन जानता है कि एशिया में केवल भारत ही उसके साथ प्रतिस्पर्धा में लगा हुआ है। भारत के पास अधिक सैन्य बल व तकनीकि है। जिसके कारण चीन भारत से भय खाता है और लगातार उसे बाधा पहुंचा रहा है। वह कभी डोकलाम को लेकर कभी कश्मीर व कभी अरुणाचल प्रदेश को लेकर विवाद उत्पन्न करता है। चीन जानता है कि पाकिस्तान आर्थिक रूप से बिलकुल जर्जर है और भारत को अपना सबसे बड़ा शत्रु मानता है। इसलिए वह भारत के विकास को रोकने के लिए पाकिस्तान की सहायता कर रहा है। भारत को इन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए तथा चीन की कुटनीतिक चालों को समझना चाहिए। चीन व पाकिस्तान की दोस्ती भारत के लिए बहुत बड़ी समस्या बन गई है। क्योंकि पहले तो भारत को केवल पाकिस्तान की तरफ से युद्ध का खतरा था, लेकिन अब उसे चीन की तरफ से भी खतरा उत्पन्न हो गया है। अतः भारत को अपनी सुरक्षा के लिए अहम कदम उठाने चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] दैनिक भास्कर हिन्दी समाचार पत्र, 1 जुलाई, 2014
[2] डॉ. सुरेन्द्र कुमार मिश्र, भारत–पाक संबंध
[3] प्रतियोगिता दर्पण हिन्दी मासिक पत्रिका, आगरा, अप्रैल 2008
[4] http://aajtak.intoday.instory/dangerous-brotherhood-of-chinapakistan-for-intia-1-892896.html, 17 Oct, 2016
[5] https://m.ajtak.in/india-today-hjindi/indiatoday-special-report/story/china-and-pakistan-are-trapping-india- 822473, 2015.07.13
[6] https://aajtak.intoday.in/story/dangerous-brotherhood-of-china-pakistan-for-india-1-892896.html.
[7] aajtyak.in10-7-2018
[8] http://m.aajtak.in/india-doday-hindi/arthaat/story/pakistan-is-newtiger-in-asia-809483 - 2015-04-24
[9] कारगर नज़र आती विदेश नीति, दैनिक जागरण 22 अगस्त 2018, पृ. 8
[10] एनएसजी सदस्यता में चीन बाधक, दैनिक जागरण, 14–9–2018
[11] 'आतंकवाद पर चीन खड़ा हुआ पाकिस्तान के साथ', दैनिक जागरण, 9–1–18
[12] 'पाक–चीन की जुगलबंदी', दैनिक जागरण, 30–9–2018